ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

नारी के परिवर्तित जीवन मूल्य - 'मिलजूल',अंतर्वषी', उपन्यास के संदर्भ में।

प्रा . डॉ . विजया जगन्नाथ पिंजारी / शिंदे

यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय , पाचवड ता . वाई ,

जि . सातारा पिन – ४१२८०१

फोन - ९ ८८१६२५८७९

मेल- vijayapinjari@gmail.com

अब हिंदी उपन्यास का क्षेत्र व्यापक हो गया है। वह मानवीय संबंधों को उजागर करनेवाला एक महत्वपूर्ण दस्तावेज बन गया है। इक्कीसवी सदी के उपन्यासकार के उपन्यास का कथ्य जीवन के अधिक नजदीक हैं , उसमें यथार्थ का पूट अधिक है। मानवीय संबंधों के बदलते रुप को उस में उजागर करने का प्रयास हुआ है। मन के भीतर की परतों को उधेडने का प्रयास भी इन उपन्यासों में हुआ है। आधुनिकता बोध से उत्पन्न अकेलेपन , अजनबीपन , यौन - विसंगतियों , विद्रोह , कुंठा एवं मूल्यों का -हास आज के उपन्यासों के विषय है। आज नये मूल्य तलाशने का प्रयास किया जा रहा है और नैतिकता के प्राचीन मानदंडों की अवहेलना हो रही है। 'सैक्स ' एवं ' रोमानियता ' को इन उपन्यासों में अधिक स्थान मिल रहा है। तथा बदलते परिवेष के कारण परिवर्तित मानसिकता को बडी गहराई से व्यक्त किया जाने लगा है। हिंदी उपन्यासों ने बहुत कम समय में अप्रतिम प्रगति की है। इक्कीसवी सदी के उपन्यासकार नये विषयों को लेकर उपन्यास लिख रहें है।

स्वाधीनता के बाद समाज के मूल्य बदलते रहें इन परिवर्तित मूल्यों के इक्कीसवी सदी के कई उपन्यासों में दर्शन हुए इक्कीसवी सदी में स्त्री लेखन नई उर्जा के साथ उभरा , स्त्री लेखन की लहर चल पड़ी है। यह उर्जा प्रभाव पाश्चात्य नारी को ऊर्जा से आया है। यह तथ्य झुठलाया नहीं जा सकता। इससे नारी के विचारों में एवं बर्ताव में परिवर्तन आया है। या कुछ स्थानों पर यह देखा जाता है यह परिवर्तन उपरी तौरपर है। आर्थिक रुप से स्वतंत्र नारी , प्रबुद्ध , विवेकी , उचित अनुचित की पहचान कर सकनेवाली नारी, अधिकार से अधिक कर्तव्य के प्रति जागरुक नारी का बहुत बडा भाग पुरुष सहचर्य को जीवन मानता है। उसके इस सहचर्य के आभाव में जीवन की नीरसता और एकाकीपन ऐसे ही हावी हो जाएँगे। जिस तरह पुरुष भी आज तक उस पर हावी नहीं हो पाया होगा। सहचर्य के अभाव में आनंद व प्रसन्नता नहीं , अपनी एक पहचान बनाने का संघर्ष ही उसके जीवन का लक्ष्य बन गया है। वर्तनान में जीवन मुल्यों को प्रतिपादित करनेवाला साहित्य प्रासंगिक होता है।

मृदुला गर्ग का 2005 में प्रकाषित ' मिलजुल ' उपन्यास नारी के स्वतंत्र अस्तित्व की खोज को प्रस्तुत करनेवाला उपन्यास है। जिसमें रुढी एवं परंपराओं में जकडी नारी की अंर्तग्रथी को सुलझाया है। शादी के दस साल बाद गुलमोहर अपनी शादी के बाद भोगा हुआ यथार्थ कागज पर अपनी पूरी वास्तविकता के साथ उतारती है।

इस उपन्यास में गुलमोहर और मोगरा दोनों बहनें है। दोनों के रुप एवं स्वभाव में काफी भेद है। मोगरा दिखने में गुल से काफी सुंदर है। पढ़ाई में अच्छी है , स्वभाव भी ऐसा माना सब के साथ सब की तरह एडजेस्ट करनेवाली नाटयाभिनय में अत्यंत प्रविण। दिखने में

Copyright © 2020 Authors

आकर्षक एवं अत्यंत मर्यादाशील । इस के बिल्कुल अलग गुल का स्वभाव होता है । उसे गोरे रंग की काफी चाह हुआ करती है । उसका भी हुस्न बेमीसाल हुआ करता है । हमेशा सहेंलीयो का ताता उसके साथ जमा रहता है । जीवन की ओर देखने का उसका दृष्टिकोन बहुत अजीब होता है । वह अपने जीवन को अपनी जवानी को अपनी तरफ से जीना चाहती है । अपनी तरफ से रखना चाहती है । उसके अपने व्यक्तिगत जीवन को लेकर काफी सपने हुआ करते है । जैसे की हर बार अपने हानीमून के लिए अलग जगह चुनना । हर साल हानीमून के लिए बाहर जाना आदि ।

इससे बिल्कुल अलग उसकी बहन हुआ करती है । वह कॉलेज के जमाने में एक नाटक में नायिका के रूप में काम करती है । उस नाटक की नायिका को रुप में वह काफी मशहूर हुआ करती है । जैन परंपरा को न मानने का स्वतंत्र पक्ष वह नाटक के माध्यम से प्रस्तुत करती है और वह अपने वास्तविक जीवन में इन्हीं विचारों को ग्रहण करती है । स्वतंत्र नारी के रूप में स्वतंत्र इमेज रखनेवाले सारे विचार इन दोनों बहनों को हुआ करते है ।

गुलमोहर की शादी अपने ही मामा की भूमी में होनेवाले लडके के साथ हो जाती है । पहले पहल अपना पति , अपना घर , परिवार , अपने बच्चे इसमें वह काफी मिलजुल जाती है । वह पूरी तरह से अपने विश्व में रमती है । परिवार के प्रति होनेवाले अपने दायित्व के प्रति , कर्तव्य के प्रति वह पूरी तरह सजग हुआ करती है । वह अपने परिवार के लिए अत्यंत प्रयत्नशील रहा करती है । उसे दो बच्चे हुआ करते हैं लेकिन वह जल्द ही समझ जाती है । उसका पति अपने परिवार की जिम्मेदारी को ठिक तरह से नहीं निभा पा रहा है । वह अपने परीवार के दायित्व से मुह मोड रहा है । कुछ कमाता नहीं और जितना कमाता है उससे परिवार का आर्थिक सवाल हल नहीं होता । फिर भी इस बात का उसे थोडा भी अफसोस नहीं होता । वह अपनी पत्नि को केवल हवस के लिए अपनाता है । अपने पति की इन हरकतों से गुलमोहर बाज तो आती किंतु अपने पती के तरह अपने पारिवारिक जिम्मेदारीयों से वह अपना मुह नहीं मोड पाती । खुद मेहनत करके काम करके अपने परिवार की जिम्मेदारी उठाती है । केवल उठाती नहीं अपने - आपको परिवार के लिए पिसती है । फिर भी पती को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता । उसकी हवस में कभी कहीं कोई कमी नहीं रहती । गुलमोहर इस सारी वास्तविकता से उब तो जाती है पर उसे छोड नहीं पाती । खुद कमाती है श्रम करती है और अपने बच्चों को बड़ा करती है ।

शादी के पहले के उसके सपने, अरमान और शादी के बाद की वास्तविकता । इन दो बातों में जमीन और आसमान इतना भेद हो जाता है । इस सारे दुःख , दर्द को उसे अकेले सहना पडता है । एक तरफ पती की बढती उम्मीदे और दूसरी तरफ परीवार के बढते सवाल । शादी के उपरांत दस साल बाद वह अपने बीते हुए कल को लिखती है । सोचती है परीवार के लिए उसने क्या कुछ नहीं किया । क्या कुछ नहीं सहा । वह सोचती है क्या यह तपस्या उसकी अकेली की थी । आज तक इस संसार में ना जाने कितनी नारिया थी, है जो इस तरह की तपस्या अपने परीवार के लिए करती थी । करती आयी है और करती रहेगी ।

कुछ ऐसाही हाल उसकी बहन मोगरा का है । एक तीस वर्षीय उम्र के बिझनेसमन के साथ उसकी शादी तो तय होती है । यह कहकर की लडका विदेश में बिझनेस करता है । लडका विदेश में है , जमाई विदेश का मिला इस धुन में उसकी शादी तो बड़े धूमधाम से होती है । शादी के कुछ समय बाद ही मोगरा यह जान जाती है । उसका पति बिझनेस नहीं करता बिझनेस की आड में कुछ और ही करता रहता है । विदेश का भूत उसके सरपर सवार है । विदेशी चकाचौंध ने उसे दिवाना बना दिया है । विदेशी लडकियों का आकर्षन उसे अधिक होता है । पत्नी मोगरा विदेशी लडके से शादी करके भी हमेशा भारत में रहा करती है । अपने बच्चों के साथ बच्चों का और उसका इस तरह अपने पती से अलग रहना इससे वह मानसिक तौर पर ना ही पूरी तरह भारतीय रह पाती है और नही विदेशी । पति की इस बात को

Copyright © 2020 Authors

वह पूरी तरह जान जाती है तो वह ना तो पति को छोडती है। ना ही मैके चली जाती है। यह वास्तविकता जान जाती है और हालात का मोगरा अच्छी खासी पढ़ी लिखी है। एक स्वतंत्र नारी के विचार उसके व्यक्तित्व में है। उसका भी परीवार , सास - ससुर पुराने खयालात के होते हैं। बहु का सर हमेशा पल्लू में ढका हुआ होना चाहिए। बहु को हमेशा बडों का आदर करना चाहिए। बड़ों के पैर छूने चाहिए। कुछ ऐसे विचार परिवारवालों के हुआ करते है। सास एक बार बिछुए पहनने देती हैं तो मोगरा उसे उतार फेक देती है। मोगरा पूरी तरह से एक परिवर्तनशील और स्वतंत्र विचारोंवाली नारी है। वह किसी पर निर्भर रहना नहीं चाहती किंतु शादी करने के बाद भी दो बच्चों की माँ होने के बावजूद वह अपने पति को पूरा का पूरा कभी पा नहीं पाती। मोगरा और गुलमोहर दोंनो बहने है, दोंनो का दुःख और जीवनयापन करने का ढंग बिल्कूल एक जैसा है। अपने परिवार के लिए अपने आप को समेटना बिल्कुल एक जैसा है। दोनों भी पढ़ी - लिखी है। स्वतंत्र विचारों की है किंतु पति के होते हुए भी वह परिवार का बोझ खुद अकेली उठाती है और पति महाशय है की नहीं के बराबर। होकर भी उनका अपने परिवार के लिए कोई फायदा नहीं। पत्नि उन दोनो के लिए एक जीवन जीने का माध्यम मात्र है और कुछ नहीं।

एक गुलमोहर जो भोगा हुआ यथार्थ दस साल बाद लिखती है। दोनो की नजरों में पुरुष प्रतिमा स्वार्थी है। दोनो अलग किस्म की जिंदगी जीना चाहती है। उनके हिस्से में अलग किस्म की जिंदगी आती है। दोनो पति की नजरों में पत्नि केवल मात्र भोग का एक साधन है और कुछ नहीं। गुलमोहर का मानना है। नारी के मन में अदब है , फन है। उसे उनसे कैसे मुक्ति मिलेगी तो मोगरा का विचार होता है। हमें औरत के रुप में अदब और फन को मानक मानकर रहना चाहिए। संक्षेप में मोगरा और गुलमोहर का जीवन की ओर देखने का दृष्टिकोन अलग होता है किंतु जिंदगी उस ढंग से जीति है। जिस जिंदगी की उन्हें कभी चाह न थी। अक्सर समाज में नारी को निम्न , मध्स , उच्च वर्ग हो अपना जीवन एडजेस्ट करके ही जीना पडता है। यह दोनों भी नारीपात्र बिल्कूल वैसे ही है।

उषा प्रियवदा का 2005 में प्रकाषित ' अंतर्वषी ' उपन्यास इस उपन्यास में भी यही बताया गया है। अक्सर लोग विदेश में रेहनेवाला दामाद पाना बडप्पन की बात मानते हैं। बीना सोचे समझे लडके की जानकारी लिए बिना अपनी लडकी की शादी करा देते हैं। विदेश में लड़का रहता है , पढता है किंतु वह पढता है या कुछ और काम करता है। अगर कुछ और काम करता है तो फिर वह अच्छा काम करता है, या बुरा। इस प्रकार किसी भी बात की जानकारी नहीं ली जाती ऐसे लोगों के पल्ले जबी किसी की लडकी पड़ती है तो उसका असर क्या होता है ? जो भी होता है अंजाम लडकी को ही भुगतना पड़ता है। श्वेश मिश्र भारतीय है। अमरीका में पीएच.डी कर रहा है और पढाई के साथ नोकरी भी करता है यह बताकर वनश्री पांडे अर्थात बनारस के चुनमुन पांडे की लडकी वनश्री उन्हें दी जाती है। वह ब्याह भी कुछ इस प्रकार होता है। शादी से पहले जो लड़का दिखाया जाता है वह श्वेष का मित्र राहुल होता है। वह श्वेष से अच्छा खासा और भारतीय परंपरा एवं सभ्यता को माननेवाला होता है। वनश्री की बुआ तथा पिता के चरण छू कर वह उन्हें यह बात पूरी तरह से दिखाने की कोशिश करता है की वह अपनी संस्कृत और संस्कारों की पूरी तरह रक्षा करनेवाला व्यक्ति है। वनश्री के साथ पूरी तरह का धोखा होता है शादी से पहले लड़के के रुप में राहुल को दिखाया जाता है और शादी श्वेष के साथ करा दी जाती है

शादी के बाद वनश्री को पता चलता है श्वेषने उसके साथ एवं उसके परीवारवालों के साथ धोखा किया है। पर वक्त आगे निकल जाता है शादी के बाद वनश्री कुछ नहीं कर पाती। वनश्री को दो बच्चे हो जाते है। श्वेष का नेचर बिल्कूल अच्छा नहीं होता। वह कही नोकरी नहीं करता पीएच डी नहीं करता बल्की ड्रग्ज का व्यापार करता है। बच्चे पैदा करना और जब अपना मन करे तब अपनी पत्नि के शरीर से खिलवाड़ करना यह उसका शौक होता है। साथ- ही- साथ उँचे कपडे पहनना। शराब पिना , सिगरेट ओढना आदि उसके शौक हुआ करते हैं। उसकी कमाई पर उसका अपना खर्च नहीं चल पाता तो बच्चों का क्या ? और कैसे चलेगा। ऐसी

Copyright © 2020 Authors

स्थिती में राहुल एक अच्छे मित्र के रुप में उसे हमेशा मदद करता है। दिन बितते है किंतु श्वेष के खयालों में कोई परिवर्तन नहीं आता। अंत में परिवार की आर्थिक

स्थिती का सामना करते -करते वनश्री तंग आती है और ऐसी हालात में सेक्रेटरी प्रॅक्टीस का कोर्स पूरा कर के नोकरी करती है। इस प्रकार हालात का सामना करके वह अपने परिवार को खुद चलाती है। बच्चों के कपड़ों तक के एहसानों तले दबी वनश्री अपने पति को हर तरह से सुधारने की कोशिश करती है। विदेश छोड कर बनारस आकर रहने लगती है। फिर भी श्वेष में कोई परिवर्तन नहीं आता। ड्रग्ज के ब्लॅकमेलींग में उसपर पकड वॉरंट लगता है। उसका भविष्य या तो फाँसी या तो जेल इस प्रकार का हो जाता है|

अत्यंत स्वाभीमानी एवं स्वतंत्र विचारोंवाली वनश्री अंत में राहुल को दूसरे पति के रुप में स्वीकारती है। वह भी श्वेष को बताकर। अर्थात श्वेष इस बात के लिए राजी नहीं होता फिर भी पहले से ही धोका देता हुआ आया श्वेष जिसको वह त्याग देती है और राहुल को जीवनसाथी के रुप में स्विकारती है। इसप्रकार ' अंतर्वषी ' उपन्यास में लेखिका ने यह बताया है वनश्री अंत में अपने मन की ही बात मानती है। यह दोनों उपन्यास इक्कीसवी सदी के है और दोनों उपन्यास स्त्री प्रधान उपन्यास है। बीसवी सदी के उपन्यासों में एवं इक्कीसवी सदी के उपन्यासों में नारी के जीवन मूल्यों में कहीं जगह परिवर्तन आए है तो कही जगह उन्होंने परंपरागत मूल्यों का वहन किया है। अर्थात परिवर्तित जीवन मूल्य गुलमोहर , मोगरा , वनश्री में यही नजर आते है की वह शिक्षित है। अपने पति की सहायता परिवार में न मिलने पर आर्थिक स्तर पर पहले स्वावलंबी होती है और परिवार की सारी जिम्मेदारीयाँ खुद अपने कंदे पर ले लेती हैं। तिनों भी पति गलत राहपर चलनेवाले , नकारे हुए और अवास्तव है। यह तिनों नारी पात्र रोती नहीं अपने आप को कोसति नहीं या मैकेवालों की सहायता नहीं लेती बल्की हालात का खुद सामना करती है और स्थिति से बाहर आ जाती है। यह तिनों नारी पात्र स्वतंत्र विचारवाले है। यही वजह है वनश्री अंत में भी अपने मन की , आत्मा की बात मानती है और राहुल से शादी करके अपना जीवन सुधारती है। इक्कीसवी सदी की इस नारीपात्र ने तमाम उपेक्षित नारीयों को यह बताया है। अगर तुम पर अन्याय हो तो सही पुरुष को चुनने का हक तुम्हें भी है। कोइ भी तुम्हारे हक को झुटला नहीं सकता।

इन दोनो उपन्यासों में स्त्री रुप को परिभाषित करनेवाली इमेज को स्वतंत्र रूप से चित्रित किया है। अगर नारी चाहे तो ही वह अपने जीवन में स्वतंत्रता प्राप्त कर सकती है। इसीलिए तो वनश्री अपने मन की बासुरी को सुनती है। यही परिवर्तन है बदले हुए परिस्थिति में नारी का स्वयं निर्णय लेना। स्वतंत्र विचार रखना , विचारों को व्यक्त करना। जैसे की मोगरा अपने सास - ससुर के सामने व्यक्त करती है। अपने पति पर पूरी तरह से निर्भर न रहना। यह भी आज के नारी का परिवर्तित जीवन मूल्य है। अगर माता - पिता दवारा लडके का चुनाव गलत हुआ तो लडकी खुद चुनाव कर सकती है। अपने भोगे हुए यथार्थ को दस साल बाद समाज के सामने यर्थाथता के साथ रखना यह भी परिवर्तन ही है।

मृदुला गर्ग , उषा प्रियवदा इन दोनो लेखिकाओं ने अंतर्वषी और मिलजुल इन दोनों उपन्यासों में समाज में विद्यमान रुढी , एवं परंपरा को, असंस्कारों के अंतग्रंथियो को सुलझाने का प्रयास किया है। दोनों उपन्यास नारी अस्तित्व के है। इक्कीसवी सदी के नारी में आझादी, स्वाभीमान, विचारों को अभिव्यक्ति देने की स्वतंत्रता , नोकरी करना, आत्मनिर्भर रुढी एवं परंपराओं को नकारन आदि साहस आया है और यही उनके परिवर्तित जीवन मूल्य है। फिर वह नागरी परिवेष में हो या शहरी परिवेष में।

संदर्भ ग्रंथ

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

१) मिलजुल - मृदुला गर्ग प्रकाधन 2005

2) अंतर्वषी - उषा प्रियवदा प्रकाषन 2005

३) विवरण पत्रिका - मार्च 2010

4) कथाक्रम पत्रिका पुष्षपाल सिंह

5) इक्कीसवी शति के नारी उपन्यास - मृदृला वर्मा 2008

Copyright © 2020 Authors